सन् १९४३ ई० तक इन भाषाओं में सत्यार्थ प्रकाश के अनुवाद होने का पता चलता है:—बंगाली, उर्दू (दो भिन्न-भिन्न अनुवाद), अंग्रेजी (दो भिन्न-भिन्न अनुवाद) पंजाबी, संस्कृत, सिंधी, उड़िया, कनाड़ी, तामिल, तेलगू, मलयालम, मरहठी, गुजराती, फ्रेंच, जर्मन, पश्तो, ब्रह्मी और नैपाली। इनमें से कुछ भाषाओं के अनेक संस्करण निकल चुके हैं। अब यह ज्ञात हो कि कुछ भाषाओं में अनुवादों के प्रथम प्रकाशित होने का समय इस प्रकार है:—

उर्दू में अनुवाद	(१)	१८९७ ई०
,, ,, ,,	(२)	१८९८ ई०
अंग्रेजी ,, ,,	(१)	१९०६ ई०
,, ,, ,,	(२)	१९०८ ई०
संस्कृत ,, ,,		१९२५ ई०

निदान सत्यार्थ प्रकाश के प्रेमी व समर्थकों का अन्दाजा इसी बात से बहुत कुछ हो सकता है कि मूलग्रन्थ व अनुवादों का प्रकाशन बहुत ज्यादा हुआ ; परन्तु साथ ही साथ इस बात से भी इन्कार नहीं किया जा सकता कि इसके विरोध में भी अब (सन् १८४४ ई०) तक जितना कार्य हुआ है उसको यथोचित रूप से जतलाने के निमित्त यहाँ पर काफी स्थान नहीं ।

सत्यार्थ प्रकाश का संशोधित संस्करण जो पहिले पहिले सन् १८८४ ई० में प्रकाशित हुआ है और जिसका आर्य सामाजिक जगत में चलन है उसके विषय में अनेक विरोधी लोगों ने इस प्रकार का भ्रम फैलाया है कि यह संस्करण श्री स्वामीजी का लिखा हुआ नहीं है क्योंकि वह सन् १८८३ ई० में स्वर्गलोग सिधार गये हैं और उक्त संशोधित संस्करण उनकी मृत्यु के पश्चात् सन् १८८४ ई० में निकला है और असली सत्यार्थ प्रकाश वह है जो सन् १८७५ ई० अर्थात् उनके जीवन काल में निकला है ।

ऐसी बात के विषय में यह जान लेना चाहिये कि श्री स्वामीजी ने संशोधित संस्करण की सामग्री सितम्बर

सन् १८८२ ई० (भाद्र शुक्ल पक्ष सं० १९३९ वि०) में ही तैयार कर दी थी,❀ उस समय में वह उदयपुरमें विराजमान थे और बाद को अन्त समय तक राजपूताना में ही रहे जिस का लेखा इस प्रकार है कि पहली मार्च सन् १८८३ ई० में गुरुवार को प्रातःकाल ही उन्होंने उदयपूर से प्रस्थान किया। सायंकाल के लगभग नींबाहेड़ा में पहुँचे और रात्रि में चित्तौड़ में विराजे। इसके पश्चात राजपूताना के अन्य स्थानों में आगमन व प्रस्थान का विवरण यह था:—

स्थान	आगमन	प्रस्थान
चित्तौड़	१ मार्च १८८३	७ मार्च १८८३
रूपाहेली	८ ,, ,,	८ ,, ,,
शाहपुरा	८ ,, ,,	२८ मई ,,
अजमेर	२८ मई ,,	२९ ,, ,,
पाली	२९ ,, ,,	३० ,, ,,
रोहट	३० ,, ,,	३१ ,, ,,
जोधपुर	३१ ,, ,,	१६ अक्तूबर ,,

❀ सत्यार्थ प्रकाश की भूमिका—लेखक।

स्थान	आगमन	प्रस्थान
रोहट	१७अक्तूबर१८८३	१८अक्तूबर१८८३
पाली	१८ ,, ,,	२० ,, ,,
आबू	२१ ,, ,,	२६ ,, ,,
अजमेर	२७ ,, ,,	३० ,, ,, (मृत्यु)

सत्यार्थ प्रकाश का छपना प्रयाग में हुआ था। प्रेस में छपाई विषयक जो सुगमतायें इस समय (सन् १९४४) में हैं, वह उस समय कदापि न थीं। प्रेस का प्रबन्ध भी बहुत सन्तोषजनक न था। छपाई का काम बहुत था। कुछ अन्य लोगों का कार्य भी छपाई का होता था❀। हाँ, ऋग्वेद और यजुर्वेद भाष्य के मासिक अंक भी प्रेस से ही निकलते थे।

उदयपूर से चित्तौड़ तक उस समय रेल न थी। शाहपुरा से सबसे अधिक नज़दीक वाला रेलवे स्टेशन

❀ 'ऋषि दयानन्द के पत्र और विज्ञापन' प्रथम भाग श्री पंडित भगवद्दत्त जी द्वारा सम्पादित—अक्तूबर सन् १९१८ ई० प्रकाशित के पत्र संख्या ३, ८, १०, ४४, ४६, ४७, ४८, ५०, ५१—लेखक।

१५ मील से कम दूर नहीं। पाली से जोधपुर तक रेलवे न थी। निदान डाक की सुगमतायें अब जैसी उस समय न थीं। सत्यार्थप्रकाश का सन् १८८४ ई० का संस्करण रायल साइज़ काग़ज़ २० × २६ में १० इञ्च और ६॥ इञ्च आकार में कुल ६०६ पृष्ठों का है। ५९२ पृष्ठों में मूल सामग्री है। १४ पृष्ठों में विषय सूची व शुद्धि-अशुद्धि आदि के पन्ने हैं। दो नम्बर ब्लेक फेस पैका† में अधिकांश ग्रन्थ है। बीच बीच के श्लोक आदि कुछ मोटे टाइप में हैं कुछ पृष्ठों को छोड़कर बाकी पृष्ठों में ३१ सतरें हैं। सम्पूर्ण ग्रन्थ दो हज़ार की संख्या में छपा था।

श्रीस्वामीजी को सन् १८८३ ई० के २९ सितम्बर को ज़हर दिया गया था। इसी सन् में ३० अक्तूबर को वह स्वर्गलोक सिधारे थे। उनकी मृत्यु से समस्त आर्य जनता तथा प्रेस के प्रबन्ध पर विशेष रूप से अच्छा प्रभाव न पड़ा था। पहले बतलाया जा चुका है कि सत्यार्थ प्रकाश की भूमिका से स्पष्ट है कि उसकी सामग्री सितम्बर सन् १८८२ ई० में ही तैयार कर दी गई थी अतः उक्त

† अर्थात् पतले बारीक टाईप—लेखक।

प्रकार की आपत्तियाँ अथवा वर्त्तमान काल (सन् १९४४ ई०) की सी सुगमताओं के न होने से सत्यार्थ प्रकाश ऐसा बड़ा ग्रन्थ श्री स्वामीजी महाराज की देख रेख में उनके जीवन-काल में पूरा-पूरा न छप सका था। श्री स्वामीजी महाराज के पत्र※ से स्पष्ट है कि उनके जीवनकाल में ईसाइयों से सम्बन्ध रखनेवाला तेरहवाँ समुल्लास छप रहा था। सत्यार्थ प्रकाश में कुल १४ समुल्लास हैं और चौदहवें के पश्चात कुछ पृष्ठ 'स्वमन्तामन्तव्य प्रकाश' के हैं। सत्यार्थ प्रकाश की भूमिका वाले समय अर्थात् सितम्बर सन् १८८२ ई० से सितम्बर सन् १८८३ ई० तक में कुल बारा समुल्लास छप सके थे। निदान श्री स्वामीजी की बीमारी व मृत्यु के पश्चात अधिक से अधिक चार मास अर्थात् सन् १८८४ ई० के प्रारंभिक भाग में प्रकाशित होगया होगा।

※ 'ऋषि दयानन्द के पत्र और विज्ञापन' प्रथम भाग—श्री पं० भगवद्दत्तजी द्वारा सम्पादित का पत्र नं० ५१—लिखित आश्विन बदी १३ सम्वत १९४० वि० अर्थात् २९ सितम्बर सन् १८८३—लेखक।

मौलवी आलिम फ़ाज़िल

महेशप्रसादजी की कुछ पुस्तकें

(हिन्दी)

महर्षि दयानन्द सरस्वती	।।।)
महर्षि दयानन्द कहाँ और कब	।)
महर्षि जीवन दर्शक	।।=)
स्वामी दयानन्द और क़ुरान	।)
गाय और क़ुरान	–)
बक़र ईद	)।।
अमर सत्यार्थप्रकाश	)।।
सत्यार्थप्रकाश पर विचार	–)
सत्यार्थप्रकाश विषयक भ्रम	)।।
सत्यार्थप्रकाश की व्यापकता	।)
विद्यामन्दिर	।–)
मनोरंजक हिसाब	।–)
ज्ञान-गुदड़ी	।)
पुष्पांजलि	।।)
मेरी ईरान यात्रा	२)

(अँगरेज़ी)

The Immortal Satyarth Prakash	–)

महर्षि दयानन्द सरस्वती, महर्षि दयानन्द कहां और कब, स्वामी दयानन्द और क़ुरान, गाय और क़ुरान, बक़र ईद, अमर सत्यार्थ प्रकाश, सत्यार्थ प्रकाश की व्यापकता आदि सर्व साधारण के लिये बहुत उपयोगी हैं। The Immortal Satyarth Prakash केवलअंग्रेज़ी जानने वालों के लिये बहुत काम की है।

जिनके पास श्री स्वामी जी का कोई जीवन चरित्र किसी भी भाषा में हो उनको—महर्षि दयानन्द सरस्वती, महर्षि दयानन्द कहां और कब, महर्षि जीवन दर्शक—अवश्य रखना चाहिये।

शिवरात्रि, आर्य्य समाज स्थापना दिवस, रक्षाबन्धन, सत्यार्थ प्रकाश दिवस, दीपावली आदि के अवसर पर कुछ पुस्तकें आर्य्य समाज के कामको विशेष रूप से सफल बना सकती हैं।

विद्यामन्दिर, मनोरंजक हिसाब, ज्ञानगुदड़ी, पुष्पांजलि बच्चों के लिये बहुत उपयोगी हैं।

समस्त पुस्तकें उपहार व पारितोषिक के लिये भी कुछ कम अच्छी नहीं हैं।

कुछ पुस्तकें बहुत कम रह गई हैं।

महसूल डाक मंगाने वालों को देना होगा।

पताः—मैनेजर आलिम फ़ाज़िल बुकडिपो,
११५, मुहतशिमगञ्ज, इलाहाबाद (U. P.)

मुद्रक—विश्वनाथप्रसाद ज्ञानमण्डल यन्त्रालय, काशी

ओ३म्

> यद्यपि मैं आर्यावर्त्त देश में उत्पन्न हुआ और बसता हूँ तथापि जैसे इस देश के मत-मतान्तरों की झूठी बातों का पक्षपात न कर यथातथ्य प्रकाश करता हूँ वैसे ही दूसरे देशस्थ वा मतोन्नतिवालों के साथ भी बर्तता हूँ।
>
> (दयानन्द—स० प्रकाश की भूमिका)

अमर सत्यार्थप्रकाश

लेखक—महेशप्रसाद, मौलवी आलिम फाज़िल

श्री स्वामी दयानन्दजी द्वारा रचित अनेक ग्रन्थ हैं ; किन्तु,जो अक्षय कीर्ति उनके 'सत्यार्थप्रकाश' को प्राप्त है वह किसी अन्य ग्रन्थ को कदापि नहीं। इसकी मूल-भाषा हिन्दी है ; परन्तु इसके अनुवाद अनेक देशी व विदेशी भाषाओं में हो चुके हैं और अनेक अनुवादों के अनेक संस्करण भी निकल चुके हैं।

सत्यार्थप्रकाश सबसे पहले सन् १८७५ ई० में प्रकाशित हुआ था। पिछले दिनों भारत में राष्ट्रीय हलचल बहुत रही है और इसके कुछ अनुवादोंका प्रकाशन बहुत अधिक हुआ है तथापि केवल मूल भाषा (हिन्दी) में ही तीन लाख से कहीं अधिक प्रकाशन अब (सन् १९४३ ई०) तक हुआ है

क्योंकि दिसम्बर सन् १९३८ ई० तक कुल तीन लाख दो सौ* प्रतियाँ प्रकाशित हुई थीं।

हाँ, यह कहना भी अनुचित न होगा कि सन् १८७५ ई० से सन् १९४३ के भीतर जितनी संख्या में सत्यार्थप्रकाश हिन्दी में छपा है उतनी या उससे अधिक संख्या में केवल हिन्दी रामायण की प्रतियाँ निकली हों तो कोई आश्चर्य नहीं; अन्यथा कोई अन्य पुस्तक हिन्दी की ऐसी प्रतीत नहीं होती जो उक्त काल के भीतर सत्यार्थप्रकाश के बराबर ही छपी हो।

यदि ग़लती नहीं करता तो कोई अन्य पुस्तक संसार की किसी भाषा में ऐसी प्रतीत नहीं होती जो प्रथम प्रकाशन के पश्चात् साठ-सत्तर वर्षों के भीतर ही इतनी संख्या में अपनी मूल भाषा में निकली हो और इतने काल में उसके इतने अनुवाद हुए हों जितने सत्यार्थप्रकाश के हुए हैं।

अनेक लोग ऐसा समझे बैठे हैं अथवा उनको बतलाया गया है कि सत्यार्थप्रकाश खण्डन-मण्डन का एक बेढब पोथा या भाण्डार है।

भ्रान्तिपूर्ण धारणा

परन्तु वास्तव में यह भ्रान्तिपूर्ण है क्योंकि सत्यार्थप्रकाश के १४† समुल्लासों में से

---

* इस बात का विस्तारपूर्वक उल्लेख मेरी पुस्तक 'सत्यार्थप्रकाश की व्यापकता' (हिन्दी) में हो चुका है। लेन्

† सत्यार्थप्रकाश के द्वितीय संस्करण (प्रकाशित स०

प्रथम दस समुल्लास रचनात्मक विषयों के हैं और बाक़ी चार ही खण्डन-मण्डन के हैं। नीचे के विवरण से पता लग जाता है कि प्रथम दस समुल्लास किन विषयों से सम्बन्ध रखनेवाले हैं—

(१) ईश्वर के ओंकारादि नामों की व्याख्या।
(२) सन्तानों की शिक्षा।
(३) ब्रह्मचर्य, पठन-पाठन-व्यवस्था, सत्यासत्य ग्रन्थों के नाम और पढ़ने-पढ़ाने की रीति।
(४) विवाह और गृहस्थाश्रमका व्यवहार।
(५) वानप्रस्थ और संन्यासाश्रम की विधि।
(६) राजधर्म।
(७) वेदेश्वर-विषय।
(८) जगत् की उत्पत्ति, स्थिति और प्रलय।
(९) विद्या, अविद्या, बन्धन और मोक्ष की व्याख्या।
(१०) आचार, अनाचार और भक्ष्याभक्ष्य विषय।

अन्तिम चार समुल्लासों में अनेक मत-मतान्तरों के विषय में थोड़ी-थोड़ी समीक्षाएं हैं। ऐसा क्यों

१८८४ ई०) में चौदह समुल्लास हैं। इस संस्करण के आधार पर जो संस्करण हैं उन्हीं का चलन है और सत्यार्थप्रकाश शब्द से इस प्रकार के ही किसी संस्करण की एक प्रति से अभिप्राय है—लेखक।

किया गया है—इस सम्बन्ध में सत्यार्थप्रकाश के दसवें समुल्लास के अन्तिम भाग में ये शब्द हैं—

'इस ग्रन्थ का पूर्वार्द्ध* इसी दसवें समुल्लास के साथ पूरा हो गया। इन समुल्लासों में विशेष खण्डन-मण्डन इसलिए नहीं लिखा कि जब तक मनुष्य सत्यासत्य के विचार में कुछ भी सामर्थ्य नहीं बढ़ाते तब तक स्थूल और सूक्ष्म खण्डनों के अभिप्राय को नहीं समझ सकते। इसलिए प्रथम सब को सत्यशिक्षा का उपदेश करके अब उत्तरार्द्ध अर्थात् जिसमें चार समुल्लास हैं उसमें विशेष खण्डन-मण्डन लिखेंगे।'

श्री स्वामीजी महाराज धर्म के उपासक थे। वे सत्य के पुजारी थे। सन् १८६३ ई० में उन्होंने प्रचार-कार्य आरम्भ किया था। इस समय से कुछ पूर्व व कुछ बाद में धर्म के नाम पर बड़ा द्वन्द्व मचा हुआ था। अनेक मिथ्या बातें लोगों में फैली हुई थीं। इस सम्बन्ध में उन्होंने जो काम किया था उससे उनकी धूम मच गयी थी। लिखना ही मुख्य साधन था जिसके द्वारा सत्य और असत्य से सम्बन्ध रखनेवाली बातें वह जनता के सम्मुख

क्यों लिखा गया

---

* प्रथम दस समुल्लासों का खण्ड पूर्वार्द्ध और अन्तिम चार का खण्ड उत्तरार्द्ध कहा जाता है

—लेखक।

रख सकते थे। फलतः सत्यासत्य के निर्णय कराने के लिए उन्होंने सत्यार्थप्रकाश लिखा ; क्योंकि मिथ्या बातों अथवा मत-मतान्तरों के विवाद मे संसार में जो-जो अनिष्ट फल हुए हैं, होते हैं और होंगे उनको पक्षपात रहित विद्वान् जान सकते हैं और जब तक लोगों से मिथ्या बातों का ज्ञान न छूटेगा, तब तक लोगों को सुख व शान्ति प्राप्त नहीं हो सकती। निस्सन्देह सत्य व असत्य का ध्यान उनको जितना था उसका अनुमान बहुत कुछ सत्यार्थप्रकाश की भूमिका व ग्यारहवें, बारहवें तेरहवें और चौदहवें समुल्लासों की अनुभूमिकाओं आदि से हो सकता है और साथ ही इस बात का भी कि उन्होंने वास्तव में निन्दा या पक्षपात को सम्मुख रखकर कुछ नहीं लिखा है।

सत्यार्थप्रकाश की रचना और उसके प्रकाशन के विषय में जिस व्यक्ति का विशेष रूप से हाथ था उसके विषय में भी कुछ जतला देना आवश्यक है। अस्तु, ज्ञात रहे कि मुरादाबाद (संयुक्त प्रान्त) के चौबे ब्राह्मण-कुलभूषण श्री राजा जयकिशनदासजी सन् १८३२ ई० में पैदा हुए थे और सन् १९०५ ई० में स्वर्गलोक सिधारे थे। सन् १८६० ई० में अपनी प्रशंसनीय सेवाओं के कारण अँग्रेजी राज्य की ओर से राजा की पदवी से सम्मानित किये गये थे और साथ ही साथ खिलअत

व जागीर भी उनको दी गयी थी। सन १८७० ई० में सी० एस० आई० अर्थात् कम्पेनियन आफ़ दी स्टार आफ इण्डिया की उपाधि उनको सरकार की ओर से मिली थी। फलतः राजा* ऐसे महान् व्यक्ति की प्रेरणा से श्री स्वामीजी द्वारा सत्यार्थ-प्रकाश रचा गया था और सन् १८७५ ई० में बनारस के स्टार† प्रेस में छपा था। इस छपे हुए सत्यार्थप्रकाश के प्रधान अर्थात् प्रारम्भिक पृष्ठ व आरम्भिक पृष्ठ के पश्चात्‌वाले पृष्ठ से विदित होता है कि यह संस्करण श्री राजा महोदय की आज्ञा व उनके खर्च से छपा था। अतः सत्यार्थ-प्रकाश की रचना व प्रकाशन के मूल कारण उक्त राजा महोदय ही थे।

महर्षि स्वामी दयानन्दजी ने अपने स्वीकार-पत्र, लिखित फाल्गुन कृष्ण ५ मङ्गलवार संवत १९३९ वि० (२७ फरवरी सन् १८८३ ई०)

---

* राजा महोदय का परिचय Dictionary of Indian Biography by C. E. Buckland published by Swan Sonnenchein & Co. London (1906 A.D.) के पृष्ठ २९९ से और अधिक मिल सकता है—लेखक।

† स्टार प्रेस काशी के रामापुरा मुहल्ले में था। यह अब जीवित नहीं है। कब टूटा या कहाँ गया—इस बात की बाबत कुछ पता मुझको अभी तक नहीं चला। ले०

के अनुसार श्रीमती परोपकारिणी सभा की स्थापना की थी। उसका एक आजीवन सदस्य श्री राजा साहब को भी बनाया था। निदान, श्री राजा महोदय को श्रीस्वामीजी के प्रति बड़ी भक्ति थी, इस बात का पता बहुत कुछ उन पत्रों से भी लग जाता है जो श्रीस्वामीजी की ओर से अनेक व्यक्तियों के नाम भेजे गये थे*। परन्तु साथ ही साथ यह भी जान लेना चाहिए कि मुसलमानों के प्रसिद्ध नेता सर सैयद अहमदखाँ साहब के साथ भी राजा महोदय की अच्छी मित्रता थी। उर्दू में 'हयात जावेद' नामक ग्रन्थ (सर सैयद महोदय का जीवनचरित्र) मौलाना अल्ताफ़ हुसैन 'हाली' साहब द्वारा रचित है। इसका जो संस्करण सन् १९३९ ई० में अंजुमन तरक्क़ी उर्दू के कार्यालय दिल्ली से प्रकाशित है उसके दूसरे भाग के पृष्ठ ४४३ से स्पष्ट होता है कि सर सैयद साहब के पुत्र श्री सैयद महमूदजी राजा साहब को 'चचा' (چچا) और सर सैयद साहब के

---

* हिन्दी में 'ऋषि दयानन्द के पत्र और विज्ञापन' श्री पण्डित भगवद्दत्तजी द्वारा सम्पादित के तृतीय भाग (प्रकाशित १९२७ ई०) का पृष्ठ ९ और चतुर्थ भाग (प्रकाशित १९२७ ई०) के पृष्ठ २ व १९ को देखना चाहिए—लेखक।

पोते श्री रास मसऊद्‌जी राजा जी को 'दादा राजा' (دادا، راجا) कहते थे* ।

अब अन्त में यह कहना है कि सत्यार्थप्रकाश के विषय में कोई व्यक्ति कोई धारणा सुन सुनाकर न स्थापित करे बल्कि उसको पक्षपात-रहित होकर पढ़े और जिस समय सत्यार्थप्रकाश लिखा गया है उस समय के आस-पास में जो धार्मिक दशा थी उस पर भली-भाँति विचार करे फिर उसके बाद सत्यार्थप्रकाश के सम्बन्ध में कोई राय क़ायम करे ।

---

* उक्त पृष्ठ के सिवा 'हयात जावेद' के प्रथम भाग के पृष्ठ ९२,११६, १३८ और २४८ तथा दूसरे भाग के पृष्ठ ४४५ में भी श्री राजाजी का उल्लेख है। 'ख़तूत सर सैयद' (उर्दू ग्रन्थ निज़ामी प्रेस, बदायूँ U. P. से सन् १९२४ ई० में मुद्रित) में राजा महोदय के नाम का एक पत्र पृष्ठ १७७ में श्री सैयद साहब की ओर से है—लेखक ।

प्रकाशक—आलिम फ़ाज़िल बुक डिपो,
११५ मुहतशिमगंज, इलाहाबाद ।

प्रथम बार सन् १९४३ ई० । दूसरी बार सन् १९४४ ई० ।

मुद्रक—विश्वनाथप्रसाद, ज्ञानमण्डल यन्त्रालय, काशी ।

ओ३म्

Though I was born in Aryavarta (India) and live in it, yet just as I do not defend the falsehoods of the faiths and religions of this country, but expose them fully; in like manner, I deal with the religions of other countries.

DAYANAND SARASWATI.
(From Dayanand's Introduction of Satyarth Prakash)

The Immortal SATYARTH PRAKASH

BY

M. MAHESH PRASAD
BENARES.

Why Swami Dayanand was born ? Why he began preaching ? Why Satyarth Prakash was written and why should it be preserved ? Such and similar questions have only one answer, and it is, "Because there was a need of it." When there is a need of a thing, it occurs. This is the scientific law, this is the religious law and this is the Universal law. I wish I could explain the philosophy behind this law in detail but I am sorry space will not permit me to do so. For the present I am prompted to write something about Satyartha Prakash. Satyartha Prakash is the Bible of Truth. It is a precious treasure which will go down from posterity to posterity as the present to those who are yet unborn. It will undoubtedly be a great pity if such an inspiring book is made the subject of political controversy.

THE HISTORY OF SATYARTHA PRAKASH

Swami Dayanand has been the author of several books. Among these Satyartha Prakash occupies a unique place. Originally published in Hindi (1875), it has been translated* into many Indian and foreign languages and many editions have been published of a number of translations.

During the last thirty years there has been much political agitation in the country and

* The Satyartha Prakash is said to be translated into Bengali, Urdu (two different versions), English (two defferent versions), Panjabi, Sanskrit, Sindhi, Oriya, Kanarese, Tamil, Telgu, Malayalam, Mahrathi, Gujrati, French, German, Pushto, Burmese and Nepali languages.

Satyartha Prakash has been available in many languages. Inspite of all these, three lakhs and 200 volumes had been published upto 1938 in Hindi alone and within the last five years the number must have gone still further.

It will not be surprising if Hindi Ramayana has been published in such a large number as Hindi Satyartha Prakash during the years 1875 and 1943, otherwise there does not appear any other Hindi Book which may have been published in such a large number during this period as Satyartha Prakash.

If I am not mistaken there does not appear any other book in any language of the world which may have been published in such a large number within 60 or 70 years of its first publication and might have been translated into so many languages.

WRONG NOTION

Many a people have been led to believe that Satyartha prakash is a strange book of destructive criticism, but in reality this is not correct. Out of the 14 Chapters * in Satyartha Prakash, the first 10 deal with constructive subjects and the remaining 4 only relate to criticism. The description

* There are 14 Chapters in the Second edition of Satyartha Prakash Published in 1884. Latest editions which are current are based on this edition and Satyartha Prakash denotes a copy of those editions.

given below gives an idea of the subject matter dealt with in the 10 Chapters :

Chapter	I	is an exposition of "Om" and other names of God.
,,	II	treats of the up bringing of children.
,,	III	treats of Brahmacharya, the duties and qualifications of scholars and teachers, good and bad books and the scheme of studies.
,,	IV	treats of marriage and married life.
,,	V	treats of Vanaprastha (the Order of Asceticism) and of Sanayas Ashram (the Order of Renunciation).
,,	VI	treats of Raj Dharma (Science of Government).
,,	VII	treats of the Veda and God.
,,	VIII	treats of the Creation, Substance and Dissolution of the Universe.
,,	IX	treats of knowledge and ignorance, and emancipation and bondage.
,,	X	treats of conduct—desirable and undesirable, and of Diet—permissible and forbidden.

In the last 4 chapters various religious doctrines have been critically examined. Why this has been done can be known from

the following words in the last portion of the 10th Chapter of Satyartha Prakash : *

"The first part of this book is here finished. In the first ten chapters we have not criticised other religions and sects to any great extent for the simple reason that people can never grasp the spirit of criticism —abstruse or otherwise – as long as their reasoning powers are not sufficiently developed to enable them to judge between right and wrong. We have, therefore, preached the gospel of truth in this first part of the book Now in the second part (comprising the last four chapters) shall mainly examine the chief religions of the world viz., of the religions and sects of India in the eleventh chapter, of Jainism and Buddhism in the twelvth, of Christianity in the thirteenth, and of Mohomedanism in the fourteenth."

WHY IT WAS WRITTEN ?

Swamiji was a votary of religion. He was a worshipper of truth. He began preaching in the year 1863. About that time great controversy was going on in the name of religion Many false beliefs were current among the people. The work which he did in this connection made him prominent in the public eye. Writing was the main instrument through which he could express

* The first 10 Chapters are called "Purwardh" पूर्वार्द्ध first half, and the last 4 Chapters are called "Uttarardha" (उत्तरार्द्ध) the latter half.

ideas relating to truth and falsehood to the public. In order that people may distinguish between right and wrong, he wrote Satyartha Prakash. Only an impartial observer can perceive the evils resulting from the practice of false and superstitious beliefs and so long as people will not discard the false beliefs they will not be able to attain peace and happiness. The conception of truth which Swamiji had before him as also the impartiality in writing Satyartha Prakash can be imagined from the introductions of its last four chapters.

It is necessary to know who was mainly responsible for getting Satyartha Prakash written and published. Raja Jai Krishna Das, who belonged to an enlightened family of Chowbe Brahmins, was born in Moradabad (U. P.) in 1832. He died in the year 1905. He was honoured by the title of Raja by the British Government for his meritorious services and was also given Khilat (خلعت) and Jagirs. He was made a C. S. I. in the year 1870. It was under the instance and pursuation of the Raja * that Swamiji wrote Satyartha Prakash which was published by the Star Press, † Benares in the year 1875. The title page and the second page of the title show that this Satyartha Prakasha was published under the instruction of the

* A detailed information about the Raja Sahib can be had from Dictionary of India Biography by C. E. Buckland, published by Swan Sonnenchein & Co., London (A. D. 1906) - page 209.

† This press does not exist now,

Raja Sahib and all expenditure incurred on its publication was borne by him. The Raja Sahib was thus the chief instrument of bringing the Satyartha Prakash into existence.

Swami Dayanand founded according to his will, dated 27th February, 1883, the Paropakarini Sabha and the said Raja Sahib was appointed as one of its life members. The Raja was a great admirer of Swamiji. This is evident from the letters which Swamiji wrote to several persons. *

It may also be mentioned that the Raja was a close and intimate friend of the great Muslim leader Sir Syed Ahmad Khan. 'Hayat Javed' in Urdu by Maulana Altaf Husain Hali is the biography of Sir Syed Ahmed Khan. From page 443 of the 1939 edition of 'Hayat Javed' published by the office of Anjuman Tarakki Urdu, Delhi, it is clear that Syed Mahmud, the son of Sir Syed Ahmad Khan, called the Raja Sahib *Chacha* and his grandson, S. R. Masood called him *Dada Raja*. †

Truth is always bitter, more so to the mind which has been brought up under the influence of dogmas. Galileo was persecuted

---

* Letters and advertisements of Swami Dayanand in Hindi (ऋषि दयनन्द के पत्र और विज्ञापन) edited by Pandit Bhagwaddatt–3rd part Published in 1927 page 9, and 4th part published in 1927, page 2 and 19.

† Apart from this page references to Raja Sahib occur on pages 92, 116, 138 and 248 in part I and on page 445 of part II of Hayat Javed. In the 'khatut Sir Syed' [Urdu] published by Nizami Press, Badaun, U. P. 1924, also contains a letter addressed to Raja Sahib on page 177.

for preaching the truth that the earth is round and not flat as believed by the Christians on the basis of their religious scriptures. Scme minds under the influences of dogmas may feel that certain chapters of "Satyartha Prakash" are unpleasant. But if they approach it with the spirit of a scientist they will find that Swami Dayanand's preachings are most undogmatic. He wants people to adopt truth and leave falsehood even if it were in his own preachings. Religions pruned of dogmas are fundamentally one-the endless quest for eternal truth which gives peace and solace to the mind and the soul.

I therefore, appeal to the people not to form any opinion about the "Satyartha Prakash" on heresay. Before expressing an opinion about it one should study it with unbiased mind.

Publisher—Alim Fazil Book Depot 115 Mohtashimganj Allahabad.

Printer—A. Bose, Indian Press Ltd., Benares.

1st edition 1000] *[11-11-1943.*